1976 On resignations

On the average every five years Kakka changed his work place to takeon new challenges. His mindset is aaprenet from the reasoning in this essay.

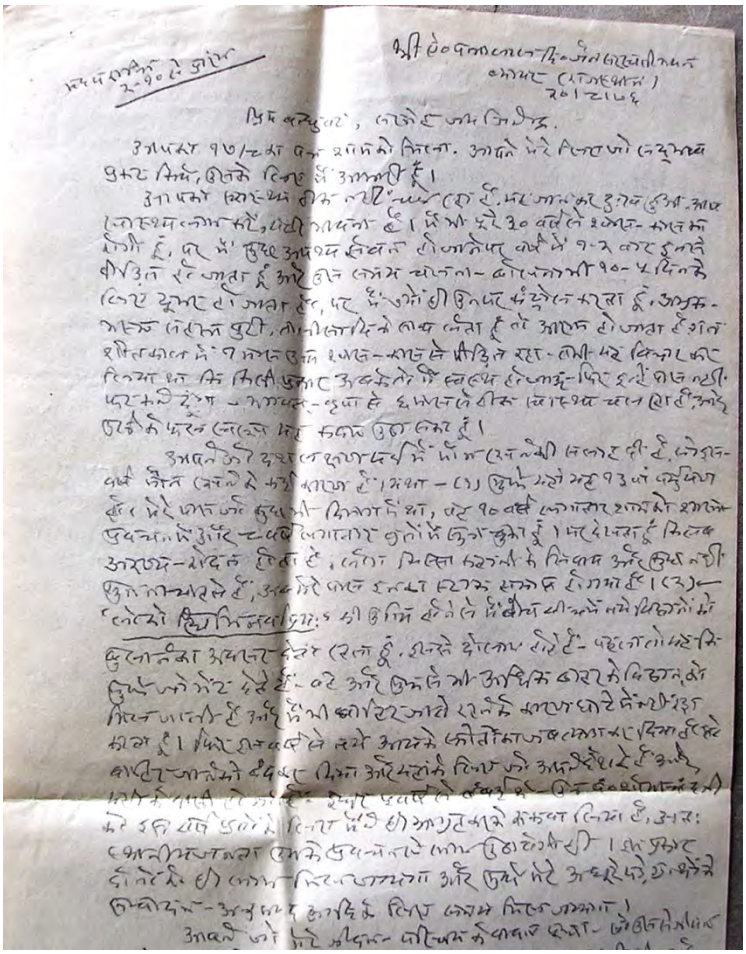

निबंध - अनुवाद आदि के लिए लगाये लिख जाऊँगा।

आपने जो मेरे जीवन-परिवार के बारे पूछा - जो उन दिनों [illegible]
के वे घाव हरे-भरे हो गये - जिन पर कुछ धूल जम रही थी। और
फिर लगाव आज [illegible] लगभग भी जब कोई नहीं आई तो फिर
आपको पत्र लिखने बैठ गया हूँ। जो अपनी लम्बी कहानी सुनो —

आज से ४० वर्ष पूर्व [illegible] ने कहानी अंक में एक कहानी
कहानी लिखी थी — 'मैं कोल्हू का बैल कैसे बना' लेकिन 'एक
कोल्हू का बैल'। सम्भवतः वह आपने पढ़ी हो और याद न हो।
उस अंक निकलने के बाद पढ़ने - वह कोल्हू का बैल मैं ही था।

उसके आगे की कहानी इस प्रकार है - उस कहानी लिखने के ~~[illegible]~~
लगभग १ वर्ष बाद मेरी पत्नी का स्वर्गवास हो गया और मुझे दूसरा विवाह
करना पड़ा। पूर्व पत्नी से १ लड़का और दो लड़कियाँ थीं और दूसरी से ५
लड़के और ४ लड़कियाँ हुई हैं और २ बच्चे २ वर्षियों अवस्था में ही
काल के गाल में समा गये। पहली पत्नी का लड़का विवाह होने के ५ वर्ष
बाद दिवंगत हुआ और लड़की विवाह के ३ वर्ष बाद। दूसरी पत्नी के सबसे
बड़ी पुत्रवधू शादी के ३ वर्ष बाद दिवंगत हुई और लड़का अमेरिका
विशेष अध्ययन करने चला गया और अब वहीं की यूनिवर्सिटी में प्रोफेसर
है। उसने दूसरी शादी भी की। एक लड़की है जो पढ़ती भी है।
है - उसे भी वह गत वर्ष अमेरिका ले गया है। वहाँ से सम्बन्ध बनाये हुए
है। यही सन्तोष है।

दूसरा बेटा पर लखनऊ ही है, उ.प्र. में जमींदारी उन्मूलन होने
के पश्चात १५ एकड़ का एक फार्म [illegible] खरीद लिया था, उस पर ही खेती
और [illegible] निर्वाह करता है, आमदनी बढ़ाने के लिए उसने मेरे विरोध करने
पर भी उसमें आटा चक्की लगा ली, और गाँववालों ने [illegible] के आगे
बाहर वालों से बिना लाइसेंस के धान चाहे ले दलने आते थे। उनकी
रिपोर्ट देदी, २ वर्ष के अन्दर उसे [illegible] बन्द कर दिया, फिर [illegible]
उन्हीं विरोधियों ने S.D.O. के द्वारे [illegible] उसे पकड़वा दिया, जमानत
ले उस [illegible] नौकरी को S.D.O. [illegible] और
लड़के के नाम वारंट निकाल गया। पूरे तीन हजार [illegible]
दे चुके हैं - उस पर D.I.R. का केस चलेगा। लड़का तो बरी हो जायगा।
क्योंकि जमीन बिजली कनेक्शन आदि मेरे ही नाम है। अतः आप भी केस
[illegible] होना - मुझे गिरफ्तारी का आदेश निकलेगा - उसके लिए मैं पूर्ण
रूप से तैयार बैठा हूँ। और इस प्रकाशित विज्ञप्ति में मैंने उनका संकेत
किया है कि 'आपत्कालीन परिस्थिति के छोड़कर अपना [illegible]
लिखा है नहीं जाऊँगा।

तीसरे नम्बर का पुत्र डबल एम.ए. है और महादेवी कन्या कालेज
में प्राध्यापक है, उसकी आँख [illegible] और [illegible]
[illegible] है, क्योंकि [illegible] लड़का [illegible]
[illegible] है [illegible] के [illegible]
[illegible] दे चुका है। पहली पत्नी के [illegible]
[illegible] के [illegible] गाने की [illegible]
[illegible] यू.पी.पी.पी. की [illegible]
[illegible] पकड़वा दिया था, [illegible]
[illegible] और [illegible] का आदेश
[illegible] ३ वर्ष [illegible]
[illegible]
[illegible] - १-१ [illegible] पड़ी। और [illegible]
[illegible] पर लड़के की [illegible] और [illegible] करना।

चौथा लड़का [illegible] में [illegible]
[illegible] है। इन [illegible] की शादी कर दी गई है और २ लड़कियों की भी
शादी कर दी है।

[illegible] लड़का [illegible] एम.ए. [illegible] पढ़ता है, और [illegible]
और [illegible] में पढ़ रहा है। [illegible] दो लड़कियाँ भी [illegible]
[illegible] है और [illegible]

आज के [illegible] के [illegible] २ लड़कियाँ और ५ पोतियाँ
[illegible] हैं [illegible]

[illegible] हैं। कुमारी [illegible] लड़कियां भी [illegible]

आज के दहेज-प्रथा के कारण २ लड़कियां और ५ पोतियां कुमारी बैठी हैं, और १८ से ले ८ लड़कियों का [illegible] है, जहां कि ६० वर्ष में ही [illegible] [illegible] और जहां [illegible] अपनी लिए एक [illegible] थी, वहां रहना आजकल लायक नहीं रह गया है, अब यही [illegible] हो रहा हूं कि जिसके [illegible] लिखा लिया — यह [illegible] है अब उनकी चिन्ता [illegible] [illegible] अब लिया है, [illegible] अनुभव हुआ हूं। यदि [illegible] तो यहां के [illegible] आदि [illegible] अन्यथा [illegible] [illegible] है।

[illegible] दत्त पं० राज[illegible] के [illegible] में [illegible] उनकी भी एक [illegible] आपके पास के [illegible] आया है, मैं [illegible] हूं कि उनका कुछ [illegible] भी [illegible] कृपा [illegible]। जहां आप [illegible] व्यक्तियों के [illegible] आते हैं वहां [illegible] उनको [illegible] आई है। [illegible] ([illegible]) का [illegible] लेना है कि [illegible]

पुनः पुनः [illegible] और आज [illegible]

इसी के अनुसार कुछ [illegible], [illegible] आप [illegible] कि [illegible]

श्री पं० [illegible] कृपा करें, [illegible] [illegible] है।

[illegible] ३.४०

[illegible] हैं। कुमारी [illegible] लड़कियां भी [illegible]

आज के दहेज-प्रथा के कारण २ लड़कियां और ५ पोतियां कुमारी बैठी हैं, और १८ से ले ८ लड़कियों का [illegible] है, जहां कि ६० वर्ष में ही [illegible] [illegible] और जहां [illegible] अपनी लिए एक [illegible] थी, वहां रहना आजकल लायक नहीं रह गया है, अब यही [illegible] हो रहा हूं कि जिसके [illegible] लिखा लिया — यह [illegible] है अब उनकी चिन्ता [illegible] [illegible] अब लिया है, [illegible] अनुभव हुआ हूं। यदि [illegible] तो यहां के [illegible] आदि [illegible] अन्यथा [illegible] [illegible] है।

[illegible] दत्त पं० राज[illegible] के [illegible] में [illegible] उनकी भी एक [illegible] आपके पास के [illegible] आया है, मैं [illegible] हूं कि उनका कुछ [illegible] भी [illegible] कृपा [illegible]। जहां आप [illegible] व्यक्तियों के [illegible] आते हैं वहां [illegible] उनको [illegible] आई है। [illegible] ([illegible]) का [illegible] लेना है कि [illegible]

पुनः पुनः [illegible] और आज [illegible]

इसी के अनुसार कुछ [illegible], [illegible] आप [illegible] कि [illegible]

श्री पं० [illegible] कृपा करें, [illegible] [illegible] है।

[illegible] ३.४०

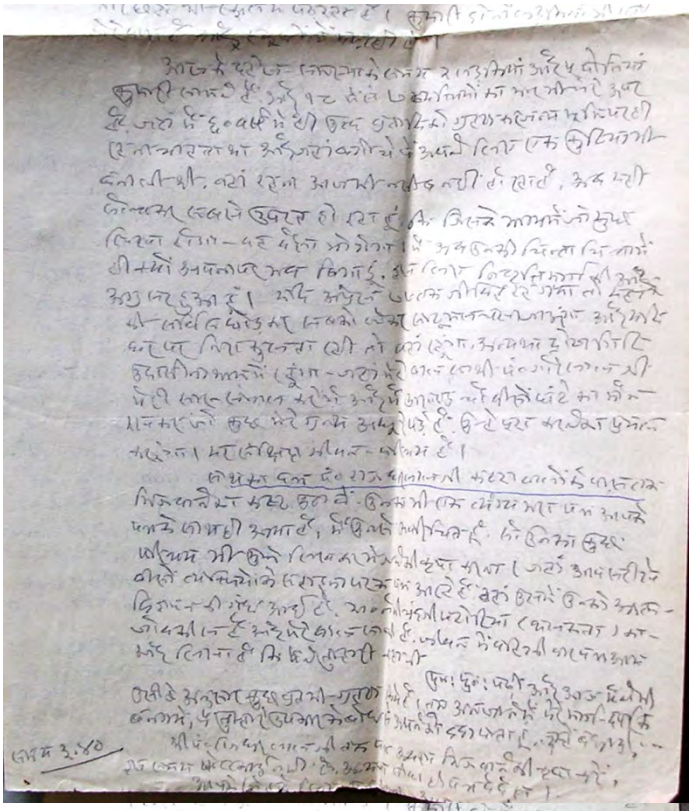

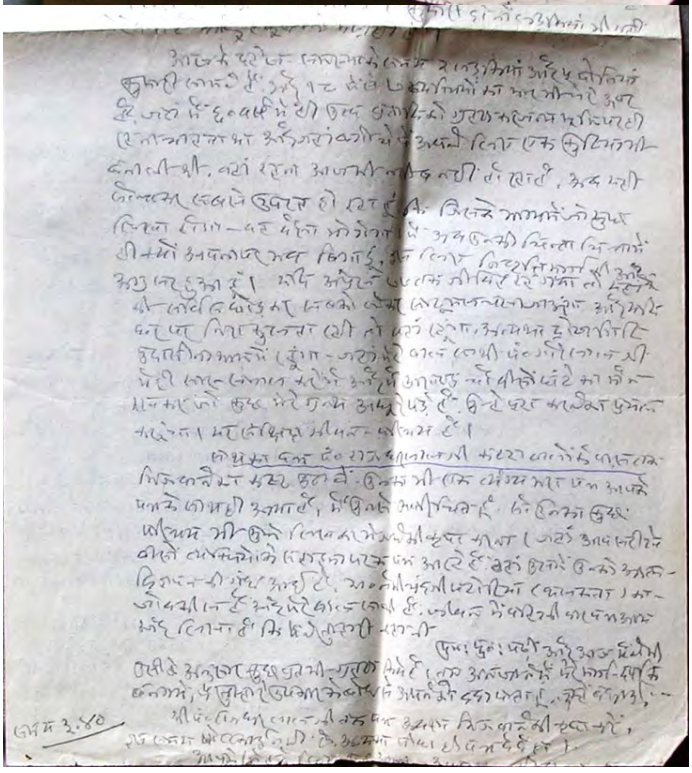

श्रीमान मंत्री जी [illegible]
वीर सेवा मन्दिर, दिल्ली

सेवा में निवेदन है कि मैं कुछ अपनी घरेलू झंझटों के कारण, तथा कुछ संस्था की अव्यवस्था के कारण अपने आपको भविष्य में संस्था की सेवा करने के लिए असमर्थ पाता हूं, लिहाजा सेवा में यह त्यागपत्र प्रस्तुत है।

जब तक त्याग पत्र स्वीकृत नहीं हो जाता, तब तक मुझे अपनी घरेलू झंझटों को दूर करने के लिए १० फरवरी ५८ से १२ अप्रैल सन् ५८ तक २ माह ३ दिन का अवकाश अवैतनिक प्रदान करने की कृपा करें।

आपका विनम्र —
हीरालाल शास्त्री
४-२-५८

वीर सेवा मन्दिर
३-२-५८

श्री मान् मंत्री जी साहब,

मार्फत- श्री मान् मुख्तार साहब के

वीर सेवा मन्दिर, दिल्ली

सेवा में निवेदन है कि हमारे प्रान्त भर में डाकों का भारी जोर है। मेरे ग्राम के चारों ओर प्रतिदिन डाके पड़ रहे हैं, पर अभी तक मेरे गाँव पर डाकुओं का आक्रमण नहीं हुआ था, अतः घरवालों को उनके विरोध करने पर भी मैं यहां लेते आए था, अभी हाल में उन्हें घर लौटे पूरे एक सप्ताह भी नहीं हो पाया कि परसों शाम को घर के पास से — मेरे घर से लगे आगे और पीछे के दो घरों पर भयंकर डाका पड़ने के समाचार मिले हैं। ऐसी असुरक्षित दशा में घरवालों को रखना जान और माली दोनों दृष्टियों से खतरनाक है, लिहाजा एक माह का अवेतन अवकाश देने की कृपा करें। क्योंकि इसके पूर्व प्रबन्ध कर आना आवश्यक है।

विनम्र —
हीरालाल शास्त्री

आगमनके कारनामों पर प्रकाश

पुनर्नियुक्तिके पश्चात् मुझे कार्य करते हुए अब ~~लगभग~~ 20 मासके लगभग हो रहे हैं। इस बीच संस्थाके कर्णधारोंका अपने साथ बहुत ही अपमानपूर्ण और हृदयहीन व्यवहार पाया है, जिसमें से अपमान-पूर्ण व्यवहारकी बात तो मैंने आपसे कुछ दिन पूर्व आपसे सरोष व्यक्त की थी, पर आपने अपने कौशलसे उसे तत्काल संभाल लिया था - और ऐसा लगा था - कि वह बात सदाके लिए शायद बन्द हो गई है, पर अभी उसके काफी समयके पश्चात्, कुछ ऐसी ही बातें फिर सामने आने लगी हैं; जिन्हें कोई भी मनस्वी विद्वान् सहन न करेगा। उन बातोंको लेखनीसे लिखना अशक्य है। यदि आप या आपकी कार्य समिति चाहे, तो मैं समक्ष सुनानेको तैयार हूं।

अभी पिछले दिनों मेरी बीमारीके समय भी एक नये कर्णधारने जिस हृदयहीनताका परिचय दिया, उसे तो मैं अमृतके घूंटके समान पी गया, पर व्याख्यानवाचस्पति आपने अवकाश स्वीकार करा कर देश जाते समय जो उन्होंने मुख्तारसा० के साथ जैसा कुछ व्यवहार किया - उससे विवश होकर मुझे कहना पड़ा कि यदि आपको मेरी छुट्टी पर आपत्ति है, तो मैं अभी बिस्तर खोलने और नहीं जानेको तैयार हूं, पर पुनः

यदि मैं अस्वस्थ होगया - तो उसकी सारी जवाबदेही आपपर होगी। तब कहीं घर जानेकी 'हां' भरी।

(2) हृदयहीनताकी दूसरी बात अभी सामने आई - जब घरसे पड़ोसियोंपर डाके पड़नेकी खबर आई, तब मैंने यह कहते हुए भी - कि मकानके दोनों ओर 2 घंटे तक डाका पड़ने और लूटमार होते समय मध्यवर्ती मकानमें रहनेवाले मेरे घरवालोंपर - बालबच्चोंपर - क्या बीती होगी - सहानुभूति-सूचक दो एक भी बात नहीं निकली बल्कि लगे ताना मारने - अभी जब घर गये थे - तब क्यों नहीं इन्तजाम कर आये? जहां मैं यह सुननेको उत्सुक था - कि उनके मुखसे निकलता - जाओ भाई - तत्काल बालबच्चोंको यहां लिवा लाओ - उनको संकटमें रखना ठीक नहीं है भाई।

(3) जब मैंने घर जानेके लिए छुट्टीका प्रार्थनापत्र ~~[illegible]~~ उनकी मार्फत दिया, तो ~~[illegible]~~ एक ओर वो उत्तर मिलता है कि मैं कुछ नहीं जानता, जो दिले, सो करो। दूसरी ओर जब मैं छुट्टी-स्वीकार करानेके लिए पानीपत रवाना हुआ - तो लिखित मनाई (छुट्टी नहीं होगी) का उक्त आदेश लेकर चपरासीको पीछेसे भेजा गया। ~~[illegible]~~

~~(4) अभी इसी मासकी पहली तारीखको~~

(४) मैं तो संस्था की ओर से वेतन आजतक भी समय पर कभी नहीं मिला है— हमेशा ही कितनी बार मांगने पर मिला है और कभी-कभी तो ३-३ मास पीछे तक भी मिला है. पर जब पैसा होते हुए भी और सामने आते हुए भी वेतन मांगा जाता है, तो श्री [illegible] कहते हैं; मंत्रीजी से मांगो। जब बा० प्रेमचंदजी से कहा जाता है, तो वे [illegible] से मांगने को कहते हैं। अभी जनवरी की ही बात है दोनों महाशयों के पास भिन्न भिन्न मदों की नगद रकमें आई हुई थी - और मेरे ही सामने एक के पास आई - पर मैंने ही लाकर दूसरे को दी, पर जब बच्चे का पत्र आया कि भोजनालय नहीं जमा कराने के कारण भोजनालय में भोजन बन्द कर दिया गया है. और प्रयोगशाला में प्रयोगों के तथा पढ़ाई की मेहनत के कारण आंखों से पानी गिरने लगा है और कमजोरी बढ़ती जा रही है. मेरे २००) चढ़े रहने पर भी बच्चे को तत्काल भेजने के लिए केवल १००) मांगने पर भी जिस हृदयहीनता के साथ इनकारी का उत्तर मिला- उससे दिल शतधा विदीर्ण हो गया - और लगा कि ऐसे हृदय-हीनों के हाथ नीचे काम करने की अपेक्षा

तो चलती रेल के पहियों के नीचे आत्मसमर्पण करना कहीं अधिक श्रेष्ठ है।

(५) मैं जिस लिए जो काम सौंपा गया था, उसे करने की ओर ([illegible] प्रेस का काम आदि) उधर किसी ने आजतक भी कोई ध्यान नहीं दिया - और सदा ही ऐसे काम सामने लाये गये - जिन्हें कि एक साधारण पढ़ा लिखा व्यक्ति भी अच्छी तरह कर सकता था - मसलन - अपने लेख, अनुवाद आदि की प्रेस कापी आदि. इन कामों को करते हुए मन पर यही भाव अंकित हुआ कि यहां पर तो हीरे से कौड़ियों का काम लिया जाता है। कभी आफिस-व्यवस्था सौंपी गई, तो कभी पत्रों का उत्तर, तो कभी पार्सल भिजवाना आदि. पर सब काम मैं चुपचाप मौनपूर्वक करता आया हूं। पर देखता हूं कि मेरी [illegible] का ठीक उपयोग नहीं है, बल्कि एक तरह का अपमान ही है.

(६) किसी भी संस्था में रात्रि-ड्यूटी नहीं है. पर यहां उसके लिए भी बाध्य किया जाने लगा है. हालांकि आवश्यकता पड़ने पर रात्रि- प्रोग्रामों की मैंने स्वयं ही व्यवस्था आदि की है, पर नियमित ड्यूटी तो अनुचित बन्धन ही है.

(७) जब कभी छुट्टी मांगी जावे, तभी नहीं देने के लिए

· रजा ली जाती है, पर मैंने एक बात की घोषणा[?] नियुक्ति के
कार्य करने के समय से ही स्पष्ट कर दी थी - कि यतः मैं यहां अकेला
रहता हूं और मेरा परिवार देश में - अतः हर दूसरे मास या
जब कभी सबब जरूरत पड़ने पर मेरा जाना अनिवार्य होगा.
और तदनुसार सन् ५[?] में भी मैंने इसी प्रकार से छुट्टियां ली हैं
और इस पुनर्नियुक्ति के पश्चात् भी इसी के अनुसार लेता
आया हूं, और बराबर छुट्टी मिलती रही है. परन्तु जबसे श्री
बा० प्रेमचन्द्रजी के हाथ में ~~कुछ~~ शासन सूत्र आया है, तबसे
बराबर इसमें अड़ंगे लगाये जाने लगे हैं और मिलना[?]
तो सदा से ही छुट्टी नहीं देने वालों में अग्रणी रहे हैं.
छुट्टी नहीं देते थे
उनके श्री पं० परमानन्दजी को कई बार बंधे बिना रोकटोक
हुए मैंने देखा है. इसलिए ~~[?]~~ मैंने अपनी नियुक्ति-
पत्र लेते हुए सन् ५८ में श्री राजकृष्णजी से इस बात को
बिल्कुल स्पष्ट कर दिया था, और हर्ष है कि उन्होंने अपनी
बात को अपने व्यवस्थापक-काल में प्रेम के साथ निभाया.
और पुनर्नियुक्ति के पश्चात्, अभी ~~तक~~ पिछले वर्ष तक उसका
निर्वाह होता आया । मैंने संस्था से उतनी ही सवैतनिक
छुट्टियां लीं, जितने का कि मुझे हक हासिल था। और

जरूरत पड़ने पर अवैतनिक छुट्टियां लेने के लिए भी विवश होना पड़ा है और गत वर्ष मैंने १५ दिन का अपना वेतन भी कटाया है। इसलिए अधिक छुट्टियों के लेते समय मैंने सदा ही यह ध्यान रखा है कि छुट्टी उसी समय लूं जब कि संस्था के किसी खास कार्य या किसी खास प्रोग्राम में बाधा न आवे - और इस लिए कभी पिछली बीमारी से उठने के पश्चात् स्वास्थ्य-लाभार्थ उचित जल-वायु परिवर्तन की सख्त जरूरत थी, पर कार्तिकी आध्यात्मिक प्रोग्राम सामने आ जाने से मैं किसी तरह रहा और उसके पूर्ण होने पर ही देश गया.

उस वक्त भी यद्यपि मैंने २० दिन की छुट्टी स्वीकृत की, मगर गुरुनानक की जयन्ती का प्रोग्राम सामने आने से - बावजूद लम्बी बड़ी कठिनाई के मजबूरन भी उन बीस दिनों के लिए नहीं रुका और एक सप्ताह पूर्व ही गुरुनानक देव की जयन्ती मनाने के लिए काफी कमजोर ही हालत में भी चला आया।

दूसरी बात मैंने आज तक जो कही ही नहीं - किन्तु कही भी काम करते समय - वह यह कि मैं सदा ही सर्विस छुट्टी से वंचित रहकर ठीक समय पहुंचा हूं. मुख्य नियम की

पीछे उन्हें कई बार बच्चों को बीमारी की हालत में छोड़कर आना पड़ा है और मेरे आने के २-४ दिन पीछे ही बच्चे की मौत भी हो गई है. पर यह सब केवल नौकरी के पीछे करना पड़ा - और हृदयहीन जीवन बिताने के लिए बाध्य होना पड़ा है। अभी हाल इसी प्रकार अपने सगे बड़े भाई के सहसा उसी दिन सख्त बीमार पड़ जाने पर और स्त्रियों की असहायता और हाय-हाय में आतंक भरी आँखों तथा वैद्यों के मनाही करने पर भी उन्हें उसी हालत में छोड़कर चला आना पड़ा - लाश कर तब - जबकि घर पर वे बिल्कुल ही अकेले थे - मोहल्ले वालों के भरोसे छोड़ना पड़ा।

अतएव चूंकि मेरे इलाके भर में डाकों का जोर है और गांवों पीड़ा के पुकारते हैं, मेरे सामने विकट स्थिति है यदि यहां बुलाऊं - तो प्रथम तो यहां स्त्रियों को रखने की अभी तक स्वीकृति प्राप्त नहीं है, दूसरे कुछ घरेलू अड़चनें ऐसी हैं कि अभी कम से कम चार मास तो मैं यहां परिवार लाने की स्थिति में ही नहीं हूं फिर यहां के वातावरण को देखते हुए लाने की कल्पना से भी जी घबड़ा जाता है, इत्यादि कारणों से मैंने

विवश होकर त्यागपत्र देने का निश्चय किया है, और उसे तत्काल देकर जाकर और वहां की परिस्थितियों को संभालने के लिए कम से कम दो मास रहना जरूरी होने के कारण तब तक दो मास का अवैतनिक अवकाश चाहा है।

आशा है आप मेरे इतने लम्बे कारण से मेरी मजबूरी और लाचारी तथा संस्था संबंधी और घरेलू झंझटों से कुछ परिचित हो सके होंगे। मैं अयोग्य व्यक्ति के हाथ में अपनी चाबी सौंपने के लिए कतई तैयार नहीं हूं, और त्यागपत्र प्रस्तुत करने का यही सबसे प्रधान कारण है